बालिका शिक्षा : चिंतन अनुचिंतन

सुश्री रेखा चुडासमा*

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में छात्र-छात्राओं की शिक्षा एवं पाठ्यक्रमों में समानता होने से बालिकाओं में नैसर्गिक, मनोवैज्ञानिक एवं भावनात्मक स्त्रियोचित गुणों का विकास नहीं हो पाता है। आज की बालिका भविष्य की नारी है। वह परिवार, समाज और देश का नेतृत्व अपने व्यक्तित्व से कर सके, इस प्रकार के पाठ्यक्रमों की उसे आवश्यकता है। पारिवारिक भावना, पारिवारिक जीवन और परिवार-व्यवस्था का मुख्य आधार गृहिणी है। आज के संदर्भ में परिवार के प्रति दृष्टिकोण बदल गया है। संस्कार-परंपरा, कुल-परंपरा एवं संस्कृति-परंपरा परिवार के माध्यम से ही हस्तांतरित होती है, इसमें महिला का ही महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

स्त्री-पुरुष समानता, स्त्री-मुक्ति, स्त्री-सशक्तीकरण आदि शब्दों की अवधारणा से बालिका-विकास के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव हुआ है। सिर्फ कैरियर आधारित, अर्थ केन्द्रित शिक्षा से भारतीय नारी के वास्तविक तथा श्रद्धास्पद स्वरूप का बोध होने में बाधा आ रही है। जीवन की चुनौतियों एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में अपनी सुरक्षा करने की क्षमता का विकास करने की व्यवस्था आज कम ही दिखाई देती है। परिवार के प्रति बालिका का कर्तव्यबोध कम होता दिख रहा है।

भारत के इतिहास की प्रेरक महिलाओं का परिचय एवं प्रेरणा, धर्म एवं संस्कृति का सही ज्ञान देने वाली शिक्षा का पाठ्यक्रमों में अभाव दिख रहा है। जो वर्तमान समय में बालिका को विशेष शिक्षा के माध्यम से दी जानी चाहिए। वर्तमान भारत को वैचारिक एवं व्यावहारिक दृष्टि से मजबूत बनाये, ऐसी शिक्षा की आज आवश्यकता है।

शिक्षाविदों के विचार बालिका शिक्षा के परिपेक्ष्य में

भारतीय शिक्षाविद् श्री लज्जाराम तोमर का कथन है ''हमें यह सत्य स्वीकार करना होगा कि विज्ञान और समाज चाहे जितने उन्नत हो जायें और सामाजिक दृष्टि से स्त्रियों और पुरुषों के व्यवहार क्षेत्र तथा कार्यक्षेत्र में चाहे जितनी समानता आ जाए, किंतु पुरुषों और स्त्रियों की शिक्षा संबंधी आवश्यकताओं और उनकी पूर्ति के साधनों में अवश्य अंतर रहेगा। यह अंतर कुछ तो उनकी नैसर्गिक भिन्नता के कारण और कुछ उनकी शारीरिक भिन्नता के कारण आवश्यक है। सामाजिक समानता का अर्थ यह नहीं है कि पुरुष और स्त्री दोनों की प्रकृति एक हो जाए। यह संभव नहीं।''

स्त्री की प्रकृतिजन्य विशेषताओं को ध्यान में रखकर उनके विकास की सुव्यवस्था शिक्षा क्षेत्र में अलग से करना परमावश्यक है। एक स्त्री को माता, गृहिणी, पुत्री, भगिनी, पत्नी आदि सभी संबंधों का निर्वाह परिवार में करना होता है। इसलिये स्त्रियों की मूलभूत मनोवैज्ञानिक और भावात्मक विशेषताओं, सौंदर्यात्मक वृत्ति, मातृत्वभाव एवं गृहिणी के रूप में उसके उत्तरदायित्व आदि का ध्यान रखते हुए उसकी शक्तियों के विकास के अनुकूल उनकी शिक्षा के पाठ्यक्रम की व्यवस्था की जानी चाहिए।

स्त्री स्वरूप, राष्ट्रहित समर्पित गृहिणी, माँ, श्रेष्ठ नागरिक की भूमिका निभाने वाली स्त्री का निर्माण करने वाले पाठ्यक्रम के निर्माण की आवश्यकता प्रतीत होती है।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद ने विभिन्न पाठ्यक्रमों की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा था - ''प्रकृति और ईश्वर ने मानवजाति को स्थिर बनाये रखने का भार स्त्री पर रखा है और मनुष्य का सृजन पुरुष नहीं अपितु स्त्रियाँ ही कर सकती हैं। इस गौरवपूर्ण तथा विशिष्ट दायित्व को स्त्रियों और समाज के समक्ष लाना चाहिये और चाहे जो भी शिक्षा पद्धति हो, उसमें इसकी गरिमा या अनिवार्यता को ध्यान में रखना चाहिए।''

* *बालिका शिक्षा, संयोजिका, विद्याभारती, जबलपुर*

कोठारी आयोग ने कहा है ''शिक्षा के द्वारा ही बालिकाओं में सामाजिक, राष्ट्रीय भाव का निर्माण करना है। नैतिक आध्यात्मिक भाव संतुष्ट करना, सहनशील, सार्वजनिक हित का ध्यान, स्वशासन, आत्म साक्षात्कार, नेतृत्वशक्ति का विकास, वैज्ञानिक मस्तिष्क का विकास, सामाजिक कुप्रथाओं का प्रतिकार करने की क्षमता का निर्माण करना है।''

महात्मा गाँधी जी ने सत्य शिक्षा में लिखा है ''जग के आधार रूप में पुरुष एवं स्त्री समान है।'' यह भी बिल्कुल सत्य है कि ''शारीरिक बनावट में दोनों में महान भेद है। पुरुषों एवं स्त्रियों की शिक्षा में उसी प्रकार का अंतर किया जाना आवश्यक है जैसा कि स्वयं प्रकृति ने उनसे किया है।''

महात्मा गाँधी जी का शिक्षा चिंतन है ''प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर तो बालिकाओं के लिए वही पाठ्यक्रम हो सकता है, जो बालकों के लिये हो, परंतु माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक, उच्च शिक्षा के स्तरों पर उनमें स्त्रियों के कार्यक्षेत्र की दृष्टि से आवश्यक परिवर्तन किया जाना चाहिए। इस प्रकार की शिक्षा से दीक्षित कन्या अपने परिवार, समाज तथा देश के सामाजिक स्तर को ऊँचा उठाने में उपयोगी सिद्ध होगी।''

हमारे देश में बालिकायें अपनी माँ, दादी, नानी, बुआ से परिवार भावना, परिवार व्यवस्था, सामाजिक नीति-रीति, गृह प्रबंधन, मनोविज्ञान, भारतीय तत्वज्ञान तथा विविध कला कौशल घर में ही अनुकरण करके सीखती थी। वर्तमान समय की परिस्थितियों और परिवार व्यवस्था में परिवर्तन होने से विद्यालय-परिवार को बालिका शिक्षा पाठ्यक्रमों के क्रियान्वयन का संकल्प करना होगा। बालिका शिक्षा के आयाम को महत्व देकर सामाजिक प्रयोगों को परिवार शिक्षा एवं समाज प्रबोधन की दृष्टि लानी होगी।'' विद्यालय को ही बालिका शिक्षा का केन्द्र बनाना होगा जो पहले परिवार में था।

उपर्युक्त शिक्षाविदों के कथन से बालिका शिक्षा का महत्व स्पष्ट होता है। इसलिए नैसर्गिक गुणों से युक्त बालिका की विशेष शिक्षा का विचार विद्याभारती ने किया है। विद्यालयों में विषय शिक्षण के साथ सह-पाठ्य क्रियाकलापों के माध्यम से पाठ्येतर क्रियाकलाप से एवं नैमित्तिक, प्रासंगिक कार्यक्रमों के माध्यम से और परिवार में किए जाने वाले क्रियाकलाप, बालिका शिक्षा का क्रियान्वयन विद्याभारती के बालिका विद्यालयों एवं सह-शिक्षा विद्यालयों में किया जा रहा है। बालिका शिक्षा में परिवार के साथ संवाद, परिवार प्रबोधन एवं समाज जागरण के विषयों पर विचारगोष्ठी एवं चिंतन होता है।

इस दृष्टि से बालिका को निम्नलिखित कार्य सीखने की आवश्यकता है।

(क) घर के छोटे मोटे काम

कुछ काम ऐसे होते हैं जो घर में किये जाते हैं और करने ही चाहिए। इन कामों की सूची इस प्रकार है -

1. घर की स्वच्छता करना, व्यवस्था करना।
2. कपड़े धोना, बर्तन साफ करना।
3. भोजन पकाना और परोसना।
4. देव पूजा, अतिथि सत्कार एवं अन्य कुलाचार एवं कुल धर्मों का पालन करना।
5. घर सजाना। घर का संस्कारक्षम वातावरण निर्माण करना।
6. बड़ों की, रुग्णों की, बच्चों की, अतिथियों की परिचर्या करना।
7. शिशु संगोपन एवं शिशु संस्कार करना।
8. गृहस्थाश्रम के सारे सामाजिक कर्तव्य समझना।

(ख) परिवार भावना, परिवार जीवन एवं परिवार व्यवस्था

1. परिवार की केन्द्र बिन्दु माँ एवं गृहिणी के उत्तरदायित्व को समझना।

2. परिवार में समन्वय, समायोजन और सबके साथ मातृवत् व्यवहार सीखना।
3. परिवार का महत्व समझना।
4. परिवार परंपरा को नई पीढ़ी को हस्तांतरित करने की प्रक्रिया समझना।
5. परिवार की जीवनशैली में भारतीयता का वैज्ञानिक दृष्टिकोण सीखना।

(ग) संस्कृति के संस्कार

1. जीवन का लक्ष्य निर्धारित करना।
2. शिष्ट और सुसंस्कृत पद्धति से व्यवहार करना।
3. संयम, अनुशासन, परिश्रम, आज्ञापालन, सेवा के भाव।
4. उत्सव पर्व मनाने की सांस्कृतिक पद्धतियाँ।
5. अपने कुल का गौरव बढ़ाने का भाव।
6. कुल परंपरा को आगे बढ़ाने के सिद्धांत।
7. घर के सभी सदस्यों को एक सूत्र मे पिरोना और उन्हें अपने-अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिये प्रेरित करना।
8. सभी के प्रति मातृवत् व्यवहार करना।
9. नारी देह में जन्म के गौरव का भाव होना।

(घ) विभिन्न व्यावहारिक कौशल

घर समाज की इकाई है। इस दृष्टि से घर के कुछ सामाजिक दायित्व होते हैं। ये दायित्व भी गृहिणी को निभाना आना चाहिए।

1. घर में जो आय होती है, घर चलाने के लिये उसका किस प्रकार व्यय करना इसे हम कहेंगे ''व्ययशास्त्र'' सीखना।
2. जितनी आय है उससे व्यय हमेशा कम रहे यह पहला नियम है। दूसरा कर्तव्य है हमें आय और कम व्यय से जो कम सुविधाएँ प्राप्त होती हैं, वह परिवार में दुःख और क्लेश का कारण न बने, यह देखना। तीसरा है धन और पदार्थो की विपुलता से ही नहीं अपितु प्रेम और सौहार्द्र की भावना से सुख मिलता है इस संस्कार को दृढ़ करना।
3. अपनी कमाई से अनिवार्य रूप से दान करना चाहिए। यह बात घर के सभी सदस्यों को समझाना चाहिए।
4. किस बात पर कितना खर्च करना, खर्च की दृष्टि से प्राथमिकताएँ तय करना, कुशलतापूर्वक खरीदी कौशल सीखने की आवश्यकता होती है।
5. व्यय कम हो इस दृष्टि से योजना करना और आय अधिक हो इस दृष्टि से छोटे-मोटे उत्पादक उद्योग सीखना चाहिए।
6. धन कितना आवश्यक है और धन से अधिक आवश्यक कौन-कौन सी वस्तुएं हैं, यह सीखना चाहिए।

बालिका शिक्षा में कार्यक्रम एवं योजनाएँ

1. बालिका व्यक्तित्व विकास शिविर।
2. किशोरी परामर्श एवं प्रशिक्षण।
3. ''कन्याभारती'' की संगठनात्मक रचना।
4. किशोरावस्था में परिवर्तन एवं व्यवहार-प्रबोधन एवं परामर्श।
5. बालिका शिक्षा संबंधित विषयों की विभिन्न परिषदों की रचना करना, कार्यशाला।
6. माता-पुत्री विचार गोष्ठी के माध्यम से चर्चा/वार्ता, जिज्ञासा समाधान।
7. परिवार के विभिन्न विषयों पर प्रबोधन/गोष्ठी।

****